पढ़ना है तो - जंगल धूसड़ आएं ...

महाविद्यालय के संस्थापक
ब्रह्मलीन महन्त अवेद्यनाथ जी महाराज

महाराणा प्रताप महाविद्यालय : एक दृष्टि में

2023-24

महाविद्यालय के प्रबंधक
पूज्य योगी आदित्यनाथ जी महाराज

राष्ट्रीय मूल्यांकन एवं प्रत्यायन परिषद (NAAC) द्वारा श्रेणी 'बी' प्रत्यायित

महाराणा प्रताप महाविद्यालय

जंगल धूसड़, गोरखपुर–273 014 (उ.प्र.)

Website : www.mpm.edu.in | e-mail : mpmpg5@gmail.com | Phone : 9794299451

हमारे आदर्श
महाराणा प्रताप

स्वदेश, स्वधर्म, स्वतंत्रता और स्वाभिमान के लिये सर्वस्व निछावर करने वाले राष्ट्रनायक परमवीर महाराणा प्रताप का उज्ज्वल प्रदीप्त चरित्र हमारा आदर्श है। मर्यादा पुरूषोत्तम भगवान् श्रीराम के श्रीमुख से निःसृत-

'जननी जन्म भूमिश्च स्वर्गादपि गरीयसी'

और पुण्य प्रताप महाराणा प्रताप का यह उद्घोष कि-

'जो हठि राखे धर्म को तिहि राखै करतार'

हमारे सदा स्मरणीय बोधवाक्य हैं। शिक्षा परिषद् और महाविद्यालय को राष्ट्रनायक महाराणा प्रताप के नाम पर स्थापित करने के पीछे यही स्पष्ट उद्देश्य और प्रयोजन है कि इन संस्थाओं में अध्ययन-अध्यापन करने वाला युवा आधुनिक ज्ञान-विज्ञान एवं कला की कालोचित शिक्षा ग्रहण करने के साथ-साथ अपने देश और समाज के प्रति सहज निष्ठा और अटूट श्रद्धा का पाठ भी पढ़े।

महाराणा प्रताप शिक्षा परिषद् के संस्थापक

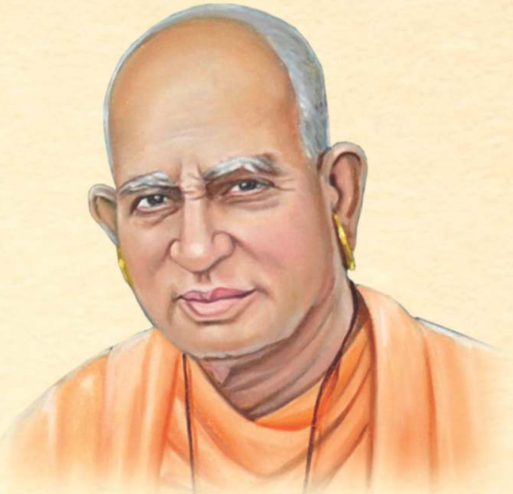

शिक्षा के प्रसार को लोक जागरण और राष्ट्रीय पुनर्निर्माण का सशक्त माध्यम स्वीकार करते हुए युगपुरुष ब्रह्मलीन पूज्य महन्त दिग्विजयनाथ जी महाराज ने शैक्षिक दृष्टि से अत्यन्त पिछड़े पूर्वी उत्तर प्रदेश के केन्द्र एवं अपनी कर्मस्थली गोरखपुर में प्राथमिक शिक्षा से लेकर उच्च शिक्षा तक की शिक्षण संस्थाओं को संचालित करने हेतु महाराणा प्रताप शिक्षा परिषद् की 1932 ई. में स्थापना कर शिक्षा क्षेत्र में अविस्मरणीय भूमिका की नींव रखी। वर्तमान में महाराणा प्रताप शिक्षा परिषद् के अन्तर्गत संचालित चार दर्जन से भी अधिक शिक्षण-संस्थाओं में 45 हजार से भी अधिक छात्र-छात्रायें कला, विज्ञान, वाणिज्य, साहित्य, चिकित्सा और प्राविधिक विषयों में परम्परागत तथा आधुनिक विषयों की शिक्षा ले रहे हैं।

महाराणा प्रताप महाविद्यालय के संस्थापक

अपने वरेण्य गुरुदेव युगपुरुष महन्त दिग्विजयनाथ जी महाराज के बहुआयामी सपनों को साकार करने में निरन्तर संलग्न सामाजिक समरसता के उद्गाता, राष्ट्रवादी राजनीति के पुरोधा और अप्रतिम धर्मयोद्धा राष्ट्रसंत ब्रह्मलीन पूज्य महन्त अवेद्यनाथ जी महाराज ने सन् 1932 ई. में गुरुदेव द्वारा स्थापित 'महाराणा प्रताप शिक्षा परिषद' को अपनी निष्ठा, सुदीर्घकालीन तपस्या और अनुभव की पूँजी से उत्तरोत्तर समृद्ध, समुन्नत और प्रगतिशील रखते हुए 1957-58 ई. में गोरखपुर में वर्तमान विश्वविद्यालय की स्थापना के लिये उदारतापूर्वक विलीनीकृत तत्कालीन महाराणा प्रताप महाविद्यालय को नये रंग रूप में पुनर्जीवित करते हुये उच्च शिक्षा से वंचित ग्रामीण अंचल जंगल धूसड़ में महाराणा प्रताप महाविद्यालय की स्थापना 2004-05 ई. में की, जिसने शैक्षणिक गुणवत्ता, संस्कारयुक्त एवं अनुशासित परिसर की स्थापना कर अपनी उत्कृष्ट साख बनायी है।

महाराणा प्रताप महाविद्यालय के प्रबन्धक

महाराणा प्रताप शिक्षा परिषद के मंत्री एवं महाराणा प्रताप महाविद्यालय, जंगल धूसड़ के प्रबन्धक गोरक्षपीठाधीश्वर महन्त योगी आदित्यनाथ जी महाराज की स्पष्ट दृष्टि है कि - महाराणा प्रताप शिक्षा परिषद एवं महाराणा प्रताप महाविद्यालय की स्थापना के दर्शन एवं लक्ष्य के अनुसार इस संस्था से अध्ययन करने वाला युवा अत्याधुनिक ज्ञान-विज्ञान तथा कला की कालोचित शिक्षा ग्रहण करने के साथ-साथ राष्ट्र एवं समाज के प्रति सहज निष्ठा और श्रद्धा का पाठ पढ़े। भारतीय जीवन दर्शन का वह अनुगामी बनें। उनका कहना है कि प्रगति और परम्परा राष्ट्रीय-सामाजिक विकास रथ के दो पहिये हैं, ऐसे में अत्याधुनिक संसाधनों, सूचना एवं संचार माध्यमों के उपयोग के साथ अध्यापन तथा भारतीय जीवन दर्शन के प्रति श्रद्धा भाव पैदा करना इस महाविद्यालय का मिशन है।

महाराणा प्रताप शिक्षा परिषद्

युगपुरुष ब्रह्मलीन महन्त दिग्विजयनाथ जी महाराज द्वारा स्थापित महाराणा प्रताप शिक्षा परिषद की मान्यता है कि किसी भी राष्ट्र की पहचान उसकी संस्कृति से होती है। संस्कृति राष्ट्रीय समाज के श्रेष्ठतम् जीवन मूल्यों से निर्मित होती है। जीवन मूल्य परम्परा और प्रगति के अनवरत समन्वय से विकसित होता है। राष्ट्रीय समाज के महापुरुषों की श्रृंखला, उनके द्वारा प्रतिष्ठित आदर्श, समय-समय पर रूढ़िगत हो रही व्यवस्थाओं का शुद्धिकरण, परम्परा और प्रगति का समन्वय तथा उनकी दिशा निर्धारित करते हैं। इस प्रकार संस्कृति निरन्तर विकसित होती हुई एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी में प्रवाहमान होती है। पीढ़ी दर पीढ़ी सांस्कृतिक प्रवाह का सर्वाधिक सुलभ माध्यम शिक्षा है। 'शिक्षा' ज्ञान-विज्ञान एवं रोजगार का मात्र साधन नहीं अपितु वह मानव को उसकी संस्कृति में संस्कारित करने का एक सशक्त माध्यम है। पुस्तकीय ज्ञान तक सीमित शिक्षा, समाज और राष्ट्र की समग्र प्रगति में कभी सहायक नहीं हो सकती। वास्तविक शिक्षा वह है जो अतीत से सीखकर वर्तमान के धरातल पर श्रेष्ठतम् भविष्य का निर्माण करने वाली पीढ़ी तैयार करे।

महाराणा प्रताप शिक्षा परिषद् की स्थापना 'शिक्षा' की इसी उपर्युक्त अवधारणा को साकार करने के उद्देश्य से युगपुरुष ब्रह्मलीन महन्त दिग्विजयनाथ जी महाराज ने की। महाराणा प्रताप शिक्षा परिषद् का लक्ष्य साफ है- अपनी शिक्षण-प्रशिक्षण संस्थाओं से जगद्गुरु भारत के लिए समर्पित युवा गढ़ना। कार्यपद्धति तय है- श्रद्धा, समर्पण, त्यागपूर्ण-पारदर्शी जीवन पद्धति के साथ उद्देश्य प्राप्ति हेतु सतत् प्रयास। मार्ग निर्धारित है- धर्म, अध्यात्म एवं लोक कल्याण का पथ। महाराणा प्रताप शिक्षा परिषद की शिक्षण-प्रशिक्षण संस्थाएँ अपने साधना-पथ पर अनवरत अग्रसर रहकर अध्ययन-अध्यापन के साथ-साथ विविध अकादमिक एवं सांस्कृतिक गतिविधियों के आयोजन द्वारा विद्यार्थियों के व्यक्तित्व का समग्र विकास सुनिश्चित करें, यही महाराणा प्रताप शिक्षा परिषद एवं उसके द्वारा संचालित संस्थाओं का धर्म है।

भारत की ज्ञान-परम्परा के विविध आयाम हैं। अपनी ज्ञान-परम्परा में दीक्षित होने के साथ-साथ भावी पीढ़ी को भी भारतीय ज्ञान-परम्परा के रंग में रंगना शिक्षण-प्रशिक्षण संस्थाओं का कार्य है। भारत जैसा राष्ट्र एवं समाज तभी प्रगतिशील हो सकता है, जब वह अपनी पुरानी नींव पर नए निर्माण का सपना संजोए। वह अपनी गौरवशाली परम्परा से प्रेरणा लेकर और बेहतर भविष्य बनाने के लिए वर्तमान का निर्माण करे। महाराणा प्रताप शिक्षा परिषद इसी वैचारिक अधिष्ठान के साथ अपने अहर्निश विकासपथ पर गतिमान है।

श्री गोरखनाथ मन्दिर ने शिक्षा और स्वास्थ्य को जन-सेवा का प्रमुख माध्यम बनाया है। युगपुरुष गोरक्षपीठाधीश्वर महन्त दिग्विजयनाथ जी महाराज द्वारा महाराणा प्रताप शिक्षा परिषद की स्थापना इसी परिकल्पना का प्रस्फुटन था। महाराणा प्रताप शिक्षा परिषद ने पूर्वी उत्तर प्रदेश में शैक्षिक पुनर्जागरण का जो दीप प्रज्ज्वलित किया उसी लौ से निकला प्रकाशपुन्ज है-दीनदयाल उपाध्याय गोरखपुर विश्वविद्यालय गोरखपुर। महाराणा प्रताप शिक्षा परिषद द्वारा सिविल लाइन्स गोलघर में स्थापित तत्कालीन महाराणा प्रताप महाविद्यालय एवं महाराणा प्रताप महिला महाविद्यालय की समस्त भूमि, भवन, विद्यार्थी एवं शिक्षक को महन्त दिग्विजयनाथ जी महाराज ने गोरखपुर में विश्वविद्यालय की स्थापना हेतु उत्तर प्रदेश शासन को समर्पित कर दिया तथा गोरखपुर विश्वविद्यालय की स्थापना के सूत्रधार बने।

विश्वविद्यालय की स्थापना के अतिरिक्त महाराणा प्रताप शिक्षा परिषद ने स्वयं भी प्राथमिक से उच्च शिक्षा तक के शिक्षण-प्रशिक्षण संस्थाओं कीश्रृंखला खड़ी की। महाराणा प्रताप शिक्षा परिषद का उद्देश्य अपनी शिक्षण-प्रशिक्षण संस्थाओं के माध्यम से विद्यार्थियों को अत्याधुनिक ज्ञान-विज्ञान की शिक्षा देने के साथ-साथ उनका समग्र व्यक्तित्व विकास करना है। भारतीय संस्कृति के प्रति निष्ठा, राष्ट्र के लिए त्याग, समर्पण, सामाजिक सहभाग विद्यार्थियों के व्यक्तित्व का हिस्सा बने, इस बात पर विशेष बल दिया जाता है। आज लगभग चार दर्जन प्राइमरी स्कूल, जूनियर हाईस्कूल, इण्टर कालेज, डिग्री कालेज, पॉलीटेक्निक, बी.एड., एम.एड. आदि पाठ्यक्रमों की संस्थाओं के साथ-साथ निःशुल्क सिलाई-कढ़ाई, कम्प्यूटर प्रशिक्षण, संस्कृत विद्यालय, व्यायामशाला के लगभग 5000 से अधिक शिक्षक-चिकित्सक एवं कर्मचारी के माध्यम से लगभग 50000 से अधिक विद्यार्थियों को प्रतिवर्ष गढ़ने तथा लगभग 25000 रोगियों के प्रति माह उपचार करने के रूप में श्री गोरखनाथ मन्दिर का लोक-कल्याण अभियान अनवरत गतिमान है। चिकित्सा सेवा का माध्यम बना है, गोरखनाथ मन्दिर परिसर में कार्यरत गुरू श्री गोरक्षनाथ चिकित्सालय, महन्त दिग्विजयनाथ आयुर्वेदिक चिकित्सालय एवं उनके द्वारा संचालित निःशुल्क प्रकल्प एवं चिकित्साशिविर। दूर-दराज गांवों तक गुरू श्री गोरक्षनाथ चिकित्सालय के निःशुल्क चिकित्सा शिविर एवं गोरक्षपीठाधीश्वर महन्त अवेद्यनाथ निःशुल्क प्राथमिक उपचार केन्द्र के माध्यम से चिकित्सा सेवा पहुँचाकर स्वास्थ्य सेवा के पथ पर निरन्तर बढ़ते रहने का प्रयास जारी है। महाराणा प्रताप शिक्षा परिषद का अगला महत्त्वपूर्ण पड़ाव 'महायोगी गोरखनाथ विश्वविद्यालय गोरखपुर' है। भारत के माननीय राष्ट्रपति श्री रामनाथ कोविन्द जी द्वारा 28 अगस्त, 2021 को इस विश्वविद्यालय के लोकार्पण के साथ गोरखपुर को 'सिटी ऑफ नालेज' बनाने के भगीरथ प्रयत्न की दिशा में एक महत्त्वपूर्ण कदम प्रारम्भ हुआ। यह विश्वविद्यालय महाराणा प्रताप शिक्षा परिषद का बहुआयामी सेवा प्रकल्प बनेगा।

महाराणा प्रताप महाविद्यालय : मील के पत्थर

महाविद्यालय का लोकार्पण

शिक्षा के प्रयास को लोक जागरण एवं पुनर्निर्माण का सशक्त माध्यम स्वीकार करते हुए युगपुरुष ब्रह्मलीन महन्त दिग्विजयनाथ जी महाराज ने शैक्षिक दृष्टि से अत्यन्त पिछड़े पूर्वी उत्तर प्रदेश के केन्द्र एवं अपनी कर्मस्थली गोरखपुर में प्राथमिक शिक्षा से लेकर उच्च शिक्षा तक की शिक्षण संस्थाओं को संचालित करने हेतु महाराणा प्रताप शिक्षा परिषद की 1932 ई. में स्थापना कर शिक्षा के क्षेत्र में अपनी अविस्मरणीय भूमिका की नींव रखी। महाराणा प्रताप महाविद्यालय, जंगल धूसड़, गोरखपुर महाराणा प्रताप शिक्षा परिषद् द्वारा स्थापित शिक्षण संस्थानों की कड़ी का एक महत्वपूर्ण पड़ाव था, जिसने अपने प्रथम सत्र से ही उच्चशिक्षा की अग्रणी शिक्षण संस्थाओं में अपना स्थान बना लिया। गोरखपुर-पिपराइच मार्ग पर महानगर से सटे इस महाविद्यालय की नींव 29 जून, 2004 ई. को तत्कालीन गोरक्षपीठाधीश्वर परमपूज्य महन्त अवेद्यनाथ जी महाराज के कर कमलों द्वारा रखी गयी एवं इस महाविद्यालय का उद्घाटन 29 जून 2005 ई. को पूर्व मानव संसाधन विकास मंत्री डॉ. मुरली मनोहर जोशी द्वारा किया गया।

महाविद्यालय परिसर

उद्देश्य

गुणवत्ता युक्त एवं मूल्य आधारित शिक्षा व्यवस्था के एक मानक केन्द्र के रूप में विकसित किये जाने की योजना से स्थापित महाराणा प्रताप महाविद्यालय प्रथम सत्र से ही छात्र/छात्राओं को पुस्तकीय ज्ञान के साथ-साथ संस्कार युक्त जीवन एवं भारतीय मूल्यों के प्रति आग्रही बनाने का भगीरथ प्रयास प्रारम्भ कर चुका है। हम इस बात का ध्यान रखकर इस संस्था का वातावरण सृजित कर रहे हैं कि यहाँ अध्ययन करने वाला युवा अपने कैरियर के साथ-साथ देश, समाज एवं परिवार के प्रति अपनी जवाबदेही महसूस करे।

प्रार्थना सभा

महाविद्यालय में दिनचर्या का प्रारम्भ राष्ट्र वन्दना और ईश वन्दना के साथ होता है। 01 अगस्त से प्रार्थना सभा प्रत्येक कार्यदिवस को प्रात: 9:20 बजे से क्रमश: राष्ट्रगान, राष्ट्रगीत, सरस्वती वन्दना एवं प्रार्थना के साथ महाविद्यालय की दिनचर्या प्रारम्भ होती है। तिथि विशेष पर यदि किसी महापुरुष/घटना की जयन्ती/ पुण्यतिथि/स्मृति दिवस होती है तो, उस महापुरुष/घटना के सन्दर्भ में उद्बोधन द्वारा विद्यार्थियों का ज्ञानवर्द्धन किया जाता है। शेष दिवसों पर श्रीमद्भागवत्गीता का हिन्दी तथा अंग्रेजी अनुवाद सहित चुने हुए श्लोकों का वाचन होता है। प्रार्थना सभा में विद्यार्थी, शिक्षक, कर्मचारी एवं प्राचार्य सम्मिलित रहते हैं।

स्वैच्छिक श्रमदान

महाविद्यालय के स्थापना काल से ही प्रत्येक सप्ताह शनिवार को महाविद्यालय में छात्र-छात्राओं, कर्मचारी, प्राध्यापक एवं प्राचार्य द्वारा स्वैच्छिक श्रमदान किया जाता है। शनिवार को अंतिम चार कक्षाएं 40 मिनट की चलाई जाती है तथा 12.

10 से 1.10 बजे तक स्वैच्छिक श्रमदान किया जाता है।

साप्ताहिक कक्षाध्यापन

सप्ताह में एक दिन प्राध्यापक की उपस्थिति में छात्र-छात्राओं द्वारा कक्षायें पढ़ायी जाती है। पूर्व निर्धारित विषय पर प्रत्येक विषय में लगभग दस छात्र-छात्राओं की कक्षाध्यापन में सहभागिता रहती है। कक्षाध्यापन में विशेष तौर पर वह विषय दिये जाते हैं जो परीक्षा के दृष्टिकोण से भी महत्वपूर्ण होते हैं।

मासिक मूल्यांकन

प्रत्येक माह के अन्त में प्राध्यापक द्वारा अपने-अपने प्रश्नपत्र/कोर्स में छात्र-छात्राओं का लिखित परीक्षा विधि से मूल्यांकन किया जाता है।

प्रगति आख्या

विद्यार्थियों के समस्त गतिविधियों का विवरण प्रगति आख्या के माध्यम से प्रति माह तैयार कर बेवसाइट के माध्यम से एवं लिखित रूप में प्रस्तुत किया जाता है। प्रगति आख्या में प्रत्येक छात्र की माहवार उपस्थिति, कक्षाध्यापन एवं मासिक मूल्यांकन तथा आचरण व्यवहार के अंक का उल्लेख होता है। प्रगति आख्या आधारित विद्यार्थियों के शैक्षिक उन्नयन के कार्य किये जाते हैं।

विद्यार्थियों को गोद लेना

प्रत्येक शिक्षक पाँच विद्यार्थियों को गोद लेकर उनके शैक्षिक उन्नयन के साथ-साथ व्यक्तित्त्व विकास हेतु अलग से प्रयास करता है। गोद लिये विद्यार्थियों का पठन/पाठन एवं अन्य समस्याओं का समाधान करते हुए शिक्षक उनकी जिम्मेदारी लेते हैं।

प्रोजेक्टर युक्त कक्षायें

पठन-पाठन में अत्याधुनिक तकनीकों के प्रयोग के साथ प्रोजेक्टर का कक्षाध्यापन में प्रयोग किया जाता है। शिक्षक अपने व्याख्यान में अधिक से अधिक पावर प्वाइंट तकनीक का उपयोग करते हैं। बी.एड्. सहित कुछ विषयों की कक्षाओं में शत-प्रतिशत प्रोजेक्टर का प्रयोग किया जाता है।

प्रशासन में छात्र सहभाग

महाविद्यालय की विविध समितियों जैसे नियन्ता मण्डल, प्रवेश समिति, प्रयोगशाला, पुस्तकालय, छात्रा समिति आदि में छात्रसंघ के प्रतिनिधि अथवा पदाधिकारी सदस्य होते हैं। प्रयत्न किया जाता है कि महाविद्यालय के प्रशासन एवं संचालन में विद्यार्थियों का अधिक से अधिक प्रत्यक्ष सहभाग हो। उनके व्यक्तित्व में निर्णय लेने की क्षमता का निरंतर विकास हो। छात्रसंघ अपने बजट का 75 प्रतिशत हिस्सा महाविद्यालय में छात्रोपयोगी संसाधनों जैसे वाटर प्यूरीफायर, प्रोजेक्टर आदि पर व्यय करता है।

गणवेश एवं परिचय पत्र

महाविद्यालय में अध्ययन करने वाले सभी छात्र-छात्राओं, शिक्षकों एवं कर्मचारियों के लिए गणवेश एवं परिचय पत्र निर्धारित है। महाविद्यालय परिसर में बिना गणवेश एवं परिचय पत्र के प्रवेश प्रतिबंधित है।

छात्रसंघ की साधारण सभा

प्रत्येक माह के प्रथम कार्य दिवस पर छात्रसंघ की साधारण सभा आयोजित की जाती है। साधारण सभा में सभी विद्यार्थी, शिक्षक-कर्मचारी, प्राचार्य उपस्थित रहते हैं। विद्यार्थी महाविद्यालय से संबंधित अपनी समस्यायें रखता है, प्राचार्य को समाधान देना होता है। अंत में वर्तमान के किसी भी प्रमुख मुद्दे पर परिचर्चा होती है। इस दिन कक्षाएं 40 मिनट की चलती हैं।

विमर्श एवं मानविकी का प्रकाशन

महाविद्यालय द्वारा प्रतिवर्ष महाविद्यालय के संस्थापक राष्ट्रसंत महन्त अवेद्यनाथ जी महाराज के स्मृति में आयोजित सप्तदिवसीय व्याख्यान माला के व्याख्यानों एवं विभिन्न विषयों के संकलित शोध पत्रों का प्रकाशन 'विमर्श' पत्रिका में किया जाता है। महाविद्यालय द्वारा अर्धवार्षिक शोधपत्रिका मानविकी का भी प्रकाशन होता है। दोनो शोध पत्रिकाएं ISSN युक्त हैं।

पाठ्यक्रम योजनानुसार कक्षायें

महाविद्यालय में प्रत्येक विषय/कोर्स के प्रत्येक प्रश्न पत्र की पाठ्यक्रम योजना महाविद्यालय के वेबसाइट पर जुलाई माह के प्रथम सप्ताह में प्रकाशित कर दी जाती है। कक्षा संचालन शत-प्रतिशत पाठ्यक्रम योजना के अनुसार किया जाता है। पाठ्यक्रम योजना की प्रति वेबसाइट से प्राप्त की जा सकती है। पाठ्यक्रम योजना की मासिक समीक्षा प्राचार्य-शिक्षक की बैठक में होती है।

महन्त अवेद्यनाथ निःशुल्क प्राथमिक उपचार केन्द्र

महाविद्यालय में महन्त अवेद्यनाथ निःशुल्क प्राथमिक उपचार केन्द्र का संचालन गुरू श्री गोरक्षनाथ चिकित्सालय के सहयोग से संचालित है। प्रत्येक बुधवार एवं बृहस्पतिवार को चिकित्सालय के चिकित्सकों द्वारा अपने स्टाफ के साथ महाविद्यालय के स्वास्थ्य केन्द्र पर ग्रामसभा जंगल धूसड़ के आस-पास के गाँवों के मरीजों का निःशुल्क स्वास्थ्य परीक्षण एवं निःशुल्क दवा वितरण किया जाता है। गम्भीर मरीजों को गोरखनाथ चिकित्सालय में न्यूनतम दर पर चिकित्सा कराने की सुविधा प्रदान की जाती है। उक्त तिथियों में निःशुल्क एम्बुलेन्स की भी सुविधा उपलब्ध रहती है। उपचार केन्द्र के स्थापना वर्ष (2015) से अभी तक पचास हजार से अधिक रोगियों की चिकित्सा की जा चुकी है।

ऑनलाइन पुस्तकालय

महाविद्यालय में अति समृद्ध एवं विविध सुविधाओं युक्त पुस्तकालय उपलब्ध है। पुस्तकालय के डिजिटलाइजेशन की प्रक्रिया पूर्ण हो चुकी है। विश्वविद्यालय अनुदान आयोग द्वारा विकसित SOUL साफ्टवेयर पर पुस्तकालय की पुस्तकें दर्ज हैं। पुस्तकालय द्वारा N-LIST लाइब्रेरी की सदस्यता प्राप्त की गयी है जिसके माध्यम से ई-बुक्स, ई-जनरल्स की एक लाख पच्चीस हजार से अधिक पुस्तकें पढ़ने तथा दुनिया की लगभग 100 से अधिक पुस्तकालयों के उपयोग का अवसर विद्यार्थी-शिक्षकों को प्राप्त है। 100 विद्यार्थियों की क्षमतायुक्त वाचनालय भी पुस्तकालय से सम्बद्ध है।

विभाग द्वारा गाँव गोद लेना

महाविद्यालय के प्रत्येक विभाग को महाविद्यालय के आस-पास के किसी न किसी गाँव को गोद लेकर उसमें

शिक्षा, स्वास्थ्य और जन चेतना जागृत करने के लिए वर्ष में 4 बार (अगस्त माह के प्रथम रविवार, बाल्मीकि जयन्ती, फरवरी माह के प्रथम रविवार एवं परीक्षा समाप्ति के बाद के प्रथम रविवार को) सभी विभाग अपने विद्यार्थियों के साथ गोद लिए गाँव में रहते हैं।

निःशुल्क प्रमाण-पत्र पाठ्यक्रम

महाविद्यालय द्वारा चार निःशुल्क प्रमाण पत्र पाठ्यक्रम विद्यार्थियो, ग्रामीण बच्चों एवं महिलाओं में अतिरिक्त कौशल एवं जीवन दृष्टि उत्पन्न करने के उद्देश्य से चलाए जाते हैं।

1. योगिराज बाबा गम्भीरनाथ निःशुल्क सिलाई-कढ़ाई एवं पेन्टिंग प्रमाण-पत्र पाठ्यक्रम

महाविद्यालय द्वारा संचालित योगिराज बाबा गम्भीरनाथ सिलाई-कढ़ाई एवं पेन्टिंग केन्द्र गरीब ग्रामीण महिलाओं एवं छात्राओं को सिलाई-कढ़ाई एवं पेंटिंग का छः माह का प्रशिक्षण देकर उन्हें इस योग्य बनाता है कि वे आर्थिक रूप से आत्मनिर्भर हो सकें। प्रतिवर्ष श्रेष्ठतम प्रशिक्षार्थी को एक सिलाई मशीन पुरस्कार स्वरूप दिया जाता है। यह प्रमाणपत्र पाठ्यक्रम महाविद्यालय के गृहविज्ञान विभाग के अन्तर्गत संचालित होता है।

2. राष्ट्रसन्त महन्त अवेद्यनाथ निःशुल्क कम्प्यूटर प्रशिक्षण प्रमाण-पत्र पाठ्यक्रम

महाविद्यालय द्वारा संचालित राष्ट्रसन्त महन्त अवेद्यनाथ निःशुल्क कम्प्यूटर प्रशिक्षण प्रमाण-पत्र पाठ्यक्रम के अन्तर्गत महाविद्यालय के विद्यार्थियों एवं निकटस्थ गाँवों के इच्छुक छात्र/छात्राओं को छः माह का निःशुल्क कम्प्यूटर प्रशिक्षण दिया जाता है। वर्तमान समय में विविध प्रकार के कार्यालय, प्रकाशन कार्य, कम्प्यूटर प्रशिक्षण हेतु प्रशिक्षित युवाओं की आवश्यकता को देखते हुए यह प्रशिक्षण दिया जाता है जिससे कि विद्यार्थी विशेषकर छात्राएँ कम्प्यूटर की दक्षता प्राप्त कर योग्यतानुसार स्थानीय बाजार में रोजगार प्राप्त कर सकें। यह प्रमाण-पत्र पाठ्यक्रम महाविद्यालय के कम्प्यूटर साइंस विभाग के अन्तर्गत संचालित होता है।

3. हमारे पूर्वज प्रमाण-पत्र पाठ्यक्रम

हमारे महापुरुष प्रमाण-पत्र पाठ्यक्रम के अन्तर्गत महापुरुषों के जीवन के प्रेरणाप्रद प्रसंगों को विद्यार्थियों के समक्ष रख कर, उनके बारे में अध्ययन एवं वर्तमान की समस्याओं पर उनकी भूमिका पर चिंतन के अवसर प्रदान किए जाते हैं। यह पाठ्यक्रम योग्य नागरिक गुणों का विकास करने में भी सक्षम हुआ है। इस पाठ्यक्रम में छः माह के प्रशिक्षण के उपरान्त प्रमाण-पत्र प्रदान किया जाता है। बी.एड्. द्वितीय वर्ष में यह पाठ्यक्रम अनिवार्य है। इस प्रमाण-पत्र का संचालन बी.एड्. विभाग द्वारा किया जाता है।

4. जीवन-मूल्य प्रमाण-पत्र पाठ्यक्रम

जीवन-मूल्य प्रमाण-पत्र पाठ्यक्रम में मानव जीवन के शाश्वत मूल्यों पर चर्चा-परिचर्चा, चिंतन, लेखन आदि के आधार पर समाज और राष्ट्र के लिए जीवन-मूल्य सृजन करने का प्रयत्न किया जाता है। इस पाठ्यक्रम में छः माह के प्रशिक्षण के उपरान्त प्रमाण-पत्र प्रदान किया जाता है। बी.एड्. प्रथम वर्ष के विद्यार्थियों हेतु यह पाठ्यक्रम अनिवार्य है। इस प्रमाण-पत्र पाठ्यक्रम का संचालन बी.एड्. विभाग द्वारा किया जाता है।

रोजगारपरक पाठ्यक्रम

रक्षा एवं स्त्रातजिक अध्ययन विभाग और एन.सी.सी. के संयुक्त तत्वावधान में **'आपदा एवं राष्ट्रीय सुरक्षा प्रबंधन'** में एक वर्षीय प्रमाण पत्र पाठ्यक्रम का संचालन किया जाता है। इस पाठ्यक्रम से विद्यार्थियों को सरकारी एवं गैर सरकारी संस्थानों में रोजगार के अवसर प्राप्त होते हैं तथा गृह विज्ञान द्वारा 3 माह का **'ब्यूटी एण्ड सेल्फ केयर'** प्रमाण-पत्र पाठ्यक्रम चलाया जाता है।

राष्ट्रीय कैडेट कोर (N.C.C.)

महाविद्यालय में विद्यार्थियों हेतु एन.सी.सी. की 45वीं विंग यू.पी. बटालियन में शामिल होने की सुविधा उपलब्ध है। यहाँ से विद्यार्थी **एन.सी.सी. 'बी' एवं 'सी' प्रमाण पत्र** प्राप्त कर सेना और अर्ध सैनिक बलों में अपना भविष्य संवार सकते हैं। यह सुविधा छात्र एवं छात्राओं दोनों के लिए उपलब्ध है। इच्छुक विद्यार्थी महाविद्यालय में नामांकन के साथ ही कार्यालय से फार्म प्राप्तकर आवेदन कर सकते हैं।

राष्ट्रीय सेवा योजना (N.S.S.)

राष्ट्रीय सेवा योजना, भारत सरकार का एक ऐसा प्रकल्प है, जिससे विद्यार्थियों में राष्ट्रीय एवं सामाजिक दायित्व तथा सेवा के भाव का विकास होता है। महाविद्यालय में स्नातक स्तर के विद्यार्थियों के लिए राष्ट्रीय सेवा योजना की दो इकाईयाँ **(गुरु श्री गोरक्षनाथ इकाई एवं हिन्दुआ सूर्य महाराणा प्रताप इकाई)** संचालित हैं। स्नातक प्रथम वर्ष के विद्यार्थी सत्र के आरम्भ में नामांकन के पश्चात कार्यालय से 10 रू. शुल्क देकर सदस्यता आवेदन पत्र भरकर राष्ट्रीय सेवा योजना कार्यक्रम अधिकारी के पास जमा करते हैं। साक्षात्कार एवं वरीयता क्रम के आधार पर सदस्यता प्राप्त कर विद्यार्थी राष्ट्रीय सेवा योजना के स्वयं सेवक/स्वयं सेविका के रूप में साामजिक एवं राष्ट्रीय सेवा में योगदान देते हैं। इसमें प्रशिक्षित सदस्यों को उच्च कक्षाओं में प्रवेश एवं राजकीय सरकारी सेवाओं में चयन के लिए वरीयता दी जाती है।

रोवर्स रेंजर्स

महाविद्यालय में स्नातक स्तर पर विद्यार्थियों के लिए रोवर्स रेंजर्स की सुविधा उपलब्ध है। इसमें प्रशिक्षित सदस्यों को उच्च कक्षाओं में प्रवेश एवं राजकीय सरकारी सेवाओं में चयन के लिए वरीयता दी जाती है। इच्छुक विद्यार्थी रोवर्स रेंजर्स की सदस्यता हेतु कार्यालय से फार्म प्राप्त कर उसे भर रोवर्स रेंजर्स प्रभारी के पास जमा करते हैं। साक्षात्कार एवं वरीयता के आधार पर सदस्यता प्रदान की जाती है।

पुरातन छात्र परिषद

महाविद्यालय में पूर्व एवं वर्तमान छात्रों के बीच आपसी संबंध तथा अनुभव के आदान-प्रदान एवं महाविद्यालय की उत्तरोत्तर प्रगति के संबंध में सुझाव देने हेतु इस परिषद या गठन किया गया है। इस परिषद में महाविद्यालय से स्नातक/स्नातकोत्तर परीक्षा उतीर्ण छात्र-छात्राएं सदस्य बन सकते हैं। सदस्यता हेतु कार्यालय/पुरातन छात्र प्रभारी से सम्पर्क करें।

स्व मूल्यांकन प्रपत्र

स्व मूल्यांकन प्रपत्र द्वारा शिक्षक अगले महीने के द्वितीय कार्यदिवस तक पूर्व माह में अपने कार्यों एवं सम्पूर्ण दायित्वों का विवरण यथा- पाठ्यक्रम योजनानुसार कक्षाध्यापन, विद्यार्थियों द्वारा साप्ताहिक कक्षाध्यापन, मासिक मूल्यांकन, विभिन्न कार्यक्रमों में योगदान, निर्धारित दायित्वों का निर्वहन, स्व-प्रेरणा से किये गये कार्य इत्यादि का उल्लेख निर्धारित प्रपत्र पर प्राचार्य को उपलब्ध कराना होता है। शिक्षक द्वारा दिये गए आख्या की प्राचार्य द्वारा समीक्षा कर आवश्यकतानुसार शिक्षकों से त्वरित संवाद स्थापित कर शिक्षण-अधिगम की गुणवत्ता बनाए रखने के प्रति उन्हें सावधान किया जाता है। यह प्रारूप सभी शिक्षकों को ऑनलाइन करना होता है।

शिक्षक प्रतिपुष्टि प्रपत्र

निर्धारित प्रारूप-'शिक्षक प्रतिपुष्टि प्रपत्र' के माध्यम से वर्ष में दो बार (सितम्बर-जनवरी) विद्यार्थियों से पठन-पाठन के सन्दर्भ में शिक्षक का फीड-बैक लिया जाता है। प्राचार्य द्वारा इसकी समीक्षा कर प्रत्येक शिक्षक से अलग-अलग वार्ता कर शिक्षण की गुणवत्ता एवं शिक्षक-विद्यार्थी सम्बन्ध का विकास सुनिश्चित किया जाता है।

ध्येय पथ

अपने अनवरत विकास यात्रा में महाविद्यालय ने अपने सभी घटकों के बीच निरन्तर संवाद के अनेक मंच विकसित किए हैं। मासिक पत्रिका 'ध्येय पथ' शिक्षक संघ, कर्मचारी संघ, छात्र संघ, पुरातन छात्र परिषद तथा अभिभावक संघ जैसे जीवन्त घटक समूहों के आपसी संवाद के साथ-साथ महाविद्यालय की अन्य गतिविधियों की प्रस्तुति का एक माध्यम है। पत्रिका में प्रत्येक माह महाविद्यालय से सम्बन्धित प्रमुख गतिविधियों का संयोजन होता है। माह के अन्त में इस पत्रिका का ई-प्रकाशन महाविद्यालय के वेबसाइट पर किया जाता है।

आदर्श ग्राम योजना

महाविद्यालय द्वारा ग्राम मंझरिया, जंगल धूसड़ को प्रयोग के तौर पर आदर्श गाँव के रूप में विकसित करने का प्रयास अनवतर जारी है। इसके अन्तर्गत गाँव के सर्वांगीण विकास के उद्देश्य से स्वच्छता, साक्षरता, स्वास्थ्य एवं जन कल्याणकारी योजनाओं को शत-प्रतिशत लागू करने की परिकल्पना के साथ कार्य प्रारम्भ किया गया। बी.एड्. विभाग द्वारा यह परियोजना सफलता पूर्वक चलाई जा रही है।

वाई-फाई युक्त परिसर

शिक्षा की गुणवत्ता में निरन्तर प्रगति एवं उसमें इन्टरनेट का व्यापक उपयोग हेतु महाविद्यालय परिसर वाई-फाई युक्त करा दिया गया। 30 जनवरी 2018 से यह सुविधा महाविद्यालय परिसर में सभी शिक्षकों-विद्यार्थियों को नि:शुल्क उपलब्ध करा दी गई।

वेबसाइट

महाविद्यालय के पास अपनी अद्यतन वेबसाइट है। महाविद्यालय की समस्त सूचना एवं विद्यार्थियों के विषय में

सम्पूर्ण जानकारी, विद्यार्थियों की प्रगति आख्या एवं पाठ्यक्रम योजना बेवसाइट पर उपलब्ध रहती है। प्रत्येक विद्यार्थी अपने से सम्बन्धित किसी भी प्रकार की जानकारी अपने आई.डी. नम्बर के द्वारा वेबसाइट पर प्राप्त कर सकता है।

शिक्षक ब्लॉग

महाविद्यालय की वेबसाइट पर महाविद्यालय के समस्त शिक्षकों का अपना ब्लॉग है। शिक्षक अपने विषय/कोर्स से सम्बन्धित प्रश्नपत्रों के विभिन्न शीर्षक के पावर प्वाइंट स्लाइड को ब्लॉग पर अपलोड करते रहते हैं। इसके अतिरिक्त शिक्षक अपने शोधपत्र भी समय-समय पर अपने ब्लॉग पर डालते रहते हैं जहाँ से सम्बन्धित विद्यार्थी उसे देख, पढ़ एवं डाउनलोड कर सकता है। विद्यार्थियों को पाठ्य सामाग्री उपलब्ध कराने का यह सशक्त माध्यम है।

ई-कन्टेन्ट

वैश्विक महामारी कोविड-19 के काल में शिक्षण कार्य सुचारू एवं प्रभावी ढंग से लागू करने के लिए उत्तर प्रदेश सरकार ने प्रदेश स्तर पर 'डिजिटल लाइब्रेरी' प्रकल्प का शुभारम्भ किया। इस प्रकल्प के अन्तर्गत स्नातक एवं स्नातकोत्तर स्तर के समस्त विषयों से सम्बन्धित विशेषज्ञों द्वारा बनाए गए ई-कन्टेंट को अपलोड करना था, जिससे विद्यार्थी को कहीं भी बैठकर शासन की वेबसाइट खोलकर अपना विषय पढ़ने की सुविधा थी। महाविद्यालय के भूगोल विभाग के शिक्षक डॉ. विजय कुमार चौधरी तथा रक्षा एवं स्त्रातजिक अध्ययन विषय के शिक्षक डॉ. अभिषेक सिंह ने इस अभियान में अपने-अपने विषय के क्रमशः 216 तथा 121 ई-कन्टेन्ट अपलोड़ किए, जो कि प्रदेश स्तर पर अपने-अपने विषयों में सर्वाधिक रहा। महाविद्यालय के सभी शिक्षकों द्वारा कुल 1067 ई-कन्टेन्ट अपलोड़ किए गए जिसके परिणामस्वरूप पूरे प्रदेश की रैंकिंग में महाविद्यालय 12वीं रैंक पर रहा।

ऑनलाइन कक्षाएँ

कोरोना काल की भयावह स्थिति में जब सभी शिक्षण संस्थाऐं शैक्षणिक गतिविधियाँ बन्द कर चुकी थीं, तब महाविद्यालय अपने सभी विषयों की समस्त कक्षाऐं ऑनलाइन संचालित की थी। ऑनलाइन कक्षा संचालन की सभी सुविधाएँ महाविद्यालय में उपलब्ध हैं।

स्मार्ट क्लास

पठन-पाठन की प्रक्रिया में एक कदम आगे बढ़ते हुए महाविद्यालय ने स्मार्ट बोर्ड के माध्यम से पढ़ाने की व्यवस्था बी.एड्. विभाग में की है। महाविद्यालय का एक कक्ष स्मार्ट बोर्ड से युक्त है जहाँ कोई भी शिक्षक 50 विद्यार्थियों को पढ़ा सकता है। वर्तमान सत्र में स्मार्ट बोर्ड से युक्त कक्षाओं की संख्या बढ़ाने की योजना है।

स्वच्छता रैंकिंग

महाविद्यालय मानव संसाधन एवं विकास मंत्रालय भारत सरकार की स्वच्छता रैंकिंग सूची-2019 में भी अपनी साफ-सफाई तथा इको-फ्रेंडली कार्यशैली के कारण उत्कृष्ट साख बनाई है। 2019 ई. में अखिल भारतीय स्तर पर हुए स्वच्छ कैम्पस सर्वे में महाविद्यालय राष्ट्रीय स्तर पर 39वें स्थान पर है।

छात्रावास

योगिराज बाबा गम्भीरनाथ सेवाश्रम

महाराणा प्रताप महाविद्यालय, जंगल धूसड़, गोरखपुर से 100 मीटर उत्तर स्थित छात्रों के लिए संचालित इस छात्रावास में निम्न सुविधाएं उपलब्ध हैं-

1. सुरम्य प्राकृतिक छत्रछाया से आच्छादित भव्य परिसर।
2. आध्यात्मिक एवं सात्विक वातावरण।
3. विद्युत एवं जनरेटर की सुविधा।
4. पुस्तकालय एवं वाचनालय।
5. व्याख्यान/सेमिनार कक्ष।
6. वाह्य एवं आन्तरिक खेल-कूद की सम्यक व्यवस्था।
7. आर.ओ. एवं वाटर कूलर युक्त शुद्ध पेय जल की व्यवस्था।
8. अनुशासन एवं सुरक्षा।
9. सम्पूर्ण परिसर वाई-फाई युक्त एवं सी.सी.टी.वी. कैमरे की निगरानी में है।
10. प्राथमिक उपचार की व्यवस्था एवं बुलावे पर 20 मिनट के अंदर गुरु श्री गोरखनाथ चिकित्सालय द्वारा एम्बुलेंस सहित चिकित्सा सुविधा।
11. पठन-पाठन की निरन्तर निगरानी।
12. निरन्तर देख-रेख में घर की तरह भोजन।

छात्रावास लोकार्पण के अवसर पर मा. राज्यपाल, श्री राम नाईक जी

छात्रावास नियमावली का लोकार्पण

प्रवेश सम्बन्धी नियम

- सामान्यतया महाराणा प्रताप शिक्षा परिषद् द्वारा संचालित किसी भी संस्था का स्नातक-स्नातकोत्तर विद्यार्थी प्रवेश ले सकता है।
- स्थान रिक्त होने पर किसी भी संस्था के विद्यार्थी को प्रबन्धक महोदय की अनुमति पर छात्रावास आवंटित किया जायेगा।
- आवेदन पत्र महाविद्यालय कार्यालय से किसी भी कार्यदिवस में प्रातः 10 बजे से 3 बजे के मध्य प्राप्त कर उसे पूर्णरूप से भर कर महाविद्यालय कार्यालय में ही निर्धारित तिथि तक जमा करना अनिवार्य होगा।
- साक्षात्कार के लिए निर्धारित तिथि एवं समय पर अभिभावक एवं विद्यार्थी दोनों की उपस्थिति अनिवार्य होगी।
- छात्रावास आवंटन तिथि से 15 दिन के अंदर छात्रावास में उपस्थिति अनिवार्य होगी, अन्यथा आवंटन निरस्त माना जायेगा।
- सामान्यतया 15 जुलाई से विश्वविद्यालय परीक्षा की समाप्ति तक छात्रावास में आवासीय सुविधा प्राप्त होगी।

वार्षिक शुल्क - 15,000/-

भोजन शुल्क

कुल छात्रावासियों द्वारा एक माह में आहार पालियों की संख्या का उस माह में भोजन व्यवस्था पर किए गए कुल व्यय में भाग देकर प्रति पाली भोजन शुल्क निर्धारित होता है। तत्पश्चात् प्रत्येक छात्रावासी द्वारा उस माह के आहार पाली में प्रति पाली भोजन शुल्क का गुणा कर प्रतिमाह का भोजन शुल्क देय होता है। छात्रावासी भोजन की सुनिश्चित/घोषित सामग्री एवं उसकी गुणवत्ता का निरन्तर परीक्षण कर सकते हैं। स्वच्छता छात्रावास-भोजनालय की विशेषता होगा। छात्रावास-प्रशासन स्वच्छता एवं गुणवत्ता सुनिश्चित करेगा तथा छात्रावासी भी इसे बनाये रखने में सहयोग करने हेतु छात्रावास प्रभारी के माध्यम से अधिकृत होंगे।

महाविद्यालय में संचालित पाठ्यक्रम

स्नातक (B.A./B.Sc./B.Com./B.Ed./B.C.A.)

महाविद्यालय में राष्ट्रीय शिक्षा नीति के अन्तर्गत स्नातक स्तर पर 3 वर्षीय (6 सेमेस्टर) सी.बी.सी.एस. (Choice Based Credit System) प्रणाली लागू है। विद्यार्थी निम्नलिखित विषय संयुक्तियों में से नियमानुसार कोर्स/विषय समूह का चयन कर सकता है।

कला संकाय (बी.ए.) : निम्न कोर्स/विषय समूह उपलब्ध हैं। प्रत्येक ग्रुप से केवल एक कोर्स/विषय लिया जा सकता है–

ग्रुप 'ए'	समाजशास्त्र/भूगोल/मनोविज्ञान/रक्षा अध्ययन/गृह विज्ञान/शारीरिक शिक्षा/कम्प्यूटर एप्लिकेशन
ग्रुप 'बी'	प्राचीन इतिहास/इतिहास/अंग्रेजी/संस्कृत/गणित
ग्रुप 'सी'	राजनीतिशास्त्र/अर्थशास्त्र/हिन्दी/शिक्षाशास्त्र

विज्ञान संकाय (बी.एस-सी.) : निम्नलिखित कोर्स/विषय/ग्रुप में से कोई एक ही कोर्स/विषय/ग्रुप लिया जा सकता है–

ग्रुप 'ए'	गणित एवं भौतिकी के साथ रसायन शास्त्र, रक्षा अध्ययन, भूगोल, मनोविज्ञान, कम्प्यूटर साइंस में से कोई एक
ग्रुप 'बी'	गणित एवं सांख्यिकी के साथ भौतिकी, रक्षा अध्ययन, भूगोल, मनोविज्ञान, कम्प्यूटर साइंस में से कोई एक
ग्रुप 'सी'	प्राणि विज्ञान एवं वनस्पति विज्ञान के साथ रसायन शास्त्र, रक्षा अध्ययन, भूगोल, मनोविज्ञान में से कोई एक

बी.सी.ए. : महाविद्यालय में वर्तमान सत्र से स्नातक स्तर पर 3 वर्षीय (6 सेमेस्टर) बी.सी.ए. पाठ्यक्रम भी संचालित होगा। बी.सी.ए. पाठ्यक्रम में 60 सीट उपलब्ध हैं।

वाणिज्य संकाय (बी.काम.) : महाविद्यालय में वाणिज्य संकाय के अन्तर्गत स्नातक स्तर पर बी.काम. 3 वर्षीय (6 सेमेस्टर) पाठ्यक्रम उपलब्ध है। बी.काम. पाठ्यक्रम में प्रवेश हेतु निर्धारित सीटों की संख्या 180 है।

बी.एड्. : महाविद्यालय में शिक्षा संकाय के अन्तर्गत सी.बी.सी.एस. प्रणाली के आधार पर बी.एड्. 2 वर्षीय (4 सेमेस्टर) पाठ्यक्रम संचालित है। शासन द्वारा बी.एड्. पाठ्यक्रम के अन्तर्गत 100 सीट स्वीकृत हैं। बी.एड्. पाठ्यक्रम में प्रवेश राज्यस्तरीय प्रवेश परीक्षा के आधार पर होता है।

परास्नातक (M.A./M.Sc./M.Com.)

महाविद्यालय में राष्ट्रीय शिक्षा नीति के अन्तर्गत परास्नातक स्तर पर 2 वर्षीय (4 सेमेस्टर) सी.बी.सी.एस. (Choice Based Credit System) प्रणाली लागू है।

कला संकाय (एम.ए.) : परास्नातक स्तर पर कला संकाय में निम्नलिखित कोर्स/विषय उपलब्ध हैं –

1. प्राचीन इतिहास (60 सीट)
2. राजनीतिशास्त्र (60 सीट)
3. भूगोल (40 सीट)
4. इतिहास (60 सीट)
5. समाजशास्त्र (60 सीट)
6. गृहविज्ञान (40 सीट)
7. हिन्दी (60 सीट)

विज्ञान संकाय (एम.एस-सी.) :

परास्नातक स्तर पर विज्ञान संकाय के अन्तर्गत महाविद्यालय में **रसायन शास्त्र (20 सीट)** पाठ्यक्रम उपलब्ध है।

वाणिज्य संकाय (एम.काम.) :

परास्नातक स्तर पर वाणिज्य संकाय के अन्तर्गत महाविद्यालय में **एम.काम. (60 सीट)** पाठ्यक्रम उपलब्ध है।

शुल्क विवरण (परीक्षा शुल्क सहित)

प्रोग्राम	प्रवेश शुल्क (वार्षिक)	परीक्षा शुल्क (प्रत्येक सेमेस्टर)
स्नातक कला (B.A.)	₹ 5,000	₹ 2,000
स्नातक कला (B.A.) प्रयोगात्मक विषय	₹ 5,500	₹ 2,000
स्नातक वाणिज्य (B.Com.)	₹ 11,000	₹ 2,000
स्नातक विज्ञान (B.Sc.)	₹ 15,000	₹ 2,000
बी.सी.ए. (B.C.A.)	₹ 25,000	₹ 2,200
परास्नातक कला (M.A.)	₹ 6,000	₹ 2,200
परास्नातक कला (M.A.) प्रयोगात्मक विषय	₹ 8,000	₹ 2,200
परास्नातक वाणिज्य (M.Com.)	₹ 15,000	₹ 2,200
परास्नातक विज्ञान (M.Sc.)	₹ 25,000	₹ 2,200
बी.एड. (स्नातक कोई भी वर्ग)	उत्तर प्रदेश शासन द्वारा निर्धारित शुल्क देय होगा।	

नोट : 1. विश्वविद्यालय द्वारा निर्धारित पंजीकरण एवं परीक्षा शुल्क प्रत्येक सेमेस्टर के लिए अलग-अलग देय होगा।
2. प्रवेश के समय प्रवेश एवं प्रथम सेमेस्टर का परीक्षा शुल्क एक साथ देय होगा।

प्रवेश नियमावली

1. प्रवेश आवेदन पत्र ऑन-लाइन एवं ऑफ-लाइन दोनों प्रकार से भरा जायेगा। प्रवेश आवेदन पत्र प्रत्येक कार्य दिवस में महाविद्यालय कार्यालय से 200 रू. में प्राप्त किया जा सकता है।

2. आवेदन पत्र को काले/नीले बाल पेन से साफ अक्षरों में पूर्ण रूप से भरकर महाविद्यालय कार्यालय 30 जून तक जमा कर दें। 30 जून के बाद प्राप्त आवेदन-पत्र का समावेश दूसरी सूची में (सीट रिक्त होने पर) होगा। आवेदन पत्र डाक से भी भेज सकते हैं। किन्तु डाक से आवेदन पत्र प्राप्त न होने पर महाविद्यालय की जिम्मेदारी नहीं होगी।

3. आवेदन पत्र के साथ किसी भी प्रकार के प्रमाण पत्र/अंक पत्र की छाया प्रति न लगाएं। मात्र आवेदन पत्र पूर्ण रूप से भरकर जमा करें। प्रवेश सूची में नाम आने पर साक्षात्कार हेतु उपस्थित होते समय तीन फोटो, सभी प्रमाण पत्रों/अंक पत्रों की मूल प्रति एवं छाया प्रति, स्थानान्तरण प्रमाण पत्र, प्रवजन (माइग्रेशन) प्रमाण पत्र, चरित्र प्रमाण पत्र, आधार पत्र तथा सम्पूर्ण शुल्क साथ लेकर आये। प्रवेश स्वीकृत होने पर आवेदन पत्र के साथ उपरोक्त समस्त प्रमाणपत्रों की छाया प्रति लगाना एवं प्रवेश शुल्क तुरन्त जमा करना आवश्यक होगा।

4. आवेदन पत्र में कोर्स/विषय समझकर भरें। एक बार प्रवेश हो जाने के बाद विषयों में परिवर्तन नहीं होगा।।

5. प्रवेश हेतु साक्षात्कार के समय वर्ग एवं कोर्स/विषय आदि के चयन हेतु सुझाव भी दिये जायेंगे। यदि छात्र/छात्रा कोर्स/विषय स्वयं न तय कर सके तो आवेदन पत्र में न भरें।

6. प्रवेश का आधार साधात्कार के द्वारा छात्र/छात्रा का मूल्यांकन होगा। साक्षात्कार हेतु इण्टरमीडिएट परीक्षा प्राप्तांक के श्रेष्ठता क्रम में बुलाया जायेगा। उक्त श्रेष्ठता सूची में नाम होने का यह कदापि अर्थ नहीं होगा कि छात्र/छात्रा प्रवेश हेतु अर्ह है।

7. इण्टरमीडिएट की परीक्षा व्यावसायिक वर्ग से उत्तीर्ण करने वाले अभ्यर्थियों की श्रेष्ठता सूची सैद्धान्तिक विषयों के प्राप्तांक के आधाार पर निर्धारित होगी, इसमें प्रायोगिक अंक सम्मिलित नहीं होंगे। यू.पी. बोर्ड एवं केन्द्रीय बोर्ड के प्राप्तांको में समानता लाने हेतु समान स्तर का सिद्धांत लागू किया जा सकता है।

8. एक संकाय में प्रवेश हेतु पंजीकृत आवेदन-पत्र किसी भी दशा में अन्य संकाय में स्थानान्तरित नहीं किया जायेगा। यदि कोई विद्यार्थी एक ही साथ कई संकायों में प्रवेश हेतु आवेदन करना चाहे तो अलग-अलग संकायों के लिए अलग-अलग आवेदन करना होगा।

9. भूगोल विषय का चयन वे सभी अभ्यर्थी कर सकते हैं जिन्होने इण्टर में भूगोल पढ़ा हो अथवा इण्टर की परीक्षा विज्ञान या कृषि से उत्तीर्ण किया हो।

10. परास्नातक (कला/विज्ञान/वाणिज्य) प्रथम सेमेस्टर के जिस विषय में प्रवेश लेना चाहते हैं वह विषय स्नातक कक्षा में अभ्यर्थी द्वारा पढ़ा गया होना अनिवार्य है।

11. परास्नातक (कला/विज्ञान/वाणिज्य) प्रथम सेमेस्टर में प्रवेश हेतु स्नातक स्तर पर 40 प्रतिशत या उससे अधिक अंक होना अनिवार्य है।

12. बी.सी.ए. पाठ्यक्रम में प्रवेश हेतु इण्टरमीडिएट स्तर पर 40 प्रतिशत से कम अंक नहीं होना चाहिए।
13. सभी संकायों में प्रतिदेय अधिप्रतिनिधित्व तथा आरक्षण सरकार एवं गोरखपुर विश्वविद्यालय द्वारा निर्धाति नियमों के अनुसार होगा। प्रबन्ध समिति के द्वारा महाविद्यालय हित में तय किये गये आरक्षण भी मान्य होंगे।
14. साक्षात्कार हेतु श्रेष्ठता सूची 9 जुलाई को महाविद्यालय के सूचना पट्ट, वेबसाइट पर तथा प्रवेश हेतु आवेदकों के बनाये गये व्हाट्सएप ग्रुप पर भी प्रकाशित कर दी जाएगी। प्रवेश 11 जुलाई से प्रारम्भ होगा।
15. श्रेष्ठता सूची में घोषित अभ्यर्थी को निर्धारित तिथि पर साक्षात्कार हेतु प्रवेश समिति के समक्ष उपस्थित होना होगा।
16. साक्षात्कार के पश्चात् चयनित अभ्यर्थी यदि उसी दिन निर्धारित शुल्क जमा नहीं करते हैं तो प्रवेश के लिये उसका चयन निरस्त माना जायेगा।
17. कोई भी संस्थागत विद्यार्थी सम्बन्धित सत्र में प्रवेश से लेकर परीक्षा की अन्तिम तिथि तक ही संस्था का विद्यार्थी माना जायेगा।
18. किसी भी पाठ्यक्रम में प्रवेश के लिए लिया गया शुल्क किसी अन्य पाठ्यक्रम में प्रवेश के लिए न तो समायोजित होगा और न ही वापस होगा। प्रत्येक छात्र/छात्रा को उसके द्वारा जमा की गयी धनराशि को रसीद दी जायेगी।
19. विवरणिका तथा नियमावली में आकस्मिक संशोधन तथा परिवर्तन का अधिकार महाविद्यालय के पास सुरक्षित है।

❖ **ऑनलाइन माध्यम से प्रवेश हेतु आवेदन करने वाले सभी अभ्यर्थियों को 11 जुलाई से प्रवेश समिति के समक्ष प्रस्तुत होना होगा। प्रवेश के समय उन्हें परिचय पत्र, पुस्तकालय कार्ड, समय-सारणी एवं चरित्र पंजिका प्रवेश स्वीकृति के बाद प्रदान की जायेगी।**

विद्यार्थियों से आग्रह

- महाविद्यालय ज्ञान का मन्दिर है। महाविद्यालय परिसर में उसी हाव-भाव और आध्यात्मिक परिवेश के निर्माण में सहयोग करें।
- महाविद्यालय परिसर को अपने घर की ही भाँति साफ एवं स्वच्छ रखने में महाविद्यालय प्रशासन का सहयोग करें।
- किसी भी प्रकार की गंदगी (प्लास्टिक थैले, टाफियों के रैपर, खराब कागज इत्यादि) को परिसर में इधर-उधर न फेंकें।
- किसी भी प्रकार के कूड़े-कचरे और गंदगी को महाविद्यालय परिसर में जगह-जगह लगे/रखे हुए कूड़ेदान में ही फेंकें।
- परिसर में रहते हुए कक्षा और कक्षा के बाहर मर्यादित और स्वानुशासित रहें।
- कक्षाओं में टेबल और बेंच आदि पर कुछ भी न लिखें।

- ऊर्जा की बचत हम सभी की जिम्मेदारी है। कक्षाओं से निकलते समय चल रहे पंखे व लाइटें अनिवार्य रूप से बन्द कर दें। अनावश्यक पंखा/लाइट न चलाएं।
- शौचालयों/मूत्रालयों का प्रयोग करने के उपरान्त पानी अवश्य गिरायें।
- कक्षाओं के बाहर गलियारों में अनावश्यक न टहलें और न ही शोर मचाएँ।
- पुस्तकालय/वाचनालय में शांति बनाए रखें। पुस्तकालय में प्रवेश करने पर आवागमन पंजिका पर हस्ताक्षर अवश्य करें।
- महाविद्यालय परिसर में प्रवेश करते समय परिचय-पत्र को अनिवार्यत: गले में पहनें रहें। जब तक महाविद्यालय परिसर में रहें, तब तक परिचय पत्र को गले में ही धारण किए रहें। बिना परिचय-पत्र के महाविद्यालय में प्रवेश निषेध रहेगा।
- विद्यार्थी अपने साथ किसी भी बाहरी व्यक्ति को लेकर न आएँ।
- प्रत्येक छात्र/छात्रा को प्रति वर्ष परिचय पत्र के साथ उनकी चरित्र पंजिका भी दी जायेगी, जिसमें उनकी उपलब्धियों, व्यवहार, उपस्थिति, सांस्कृतिक कार्यक्रमों सहित अन्य सामाजिक गतिविधियों का प्रमाणिक विवरण होगा। उक्त चरित्र-पंजिका को छात्र/छात्रा सदैव अपने पास रखें कहीं भी उक्त पंजिका को प्रमाण-पत्र के रूप में प्रस्तुत किया जा सकता है।
- स्वतंत्रता दिवस (15 अगस्त) एवं गणतंत्र दिवस (26 जनवरी) पर महाविद्यालय के समारोह में उपस्थित होना अनिवार्य होगा। अनुपस्थित होने पर नियमानुसार कार्रवाई की जायेगी।
- ब्रह्मलीन महन्त दिग्विजयनाथ जी महाराज एवं ब्रह्मलीन राष्ट्रसन्त महन्त अवेद्यनाथ जी महाराज की पुण्यतिथि सप्ताह समारोह तथा महाराणा प्रताप शिक्षा परिषद के संस्थापक समारोह के उद्घाटन (04 दिसम्बर) एवं समापन समारोह (10 दिसम्बर) में प्रत्येक छात्र/छात्रा की उपस्थिति अनिवार्य होगी। 04 दिसम्बर को अनुपस्थित रहने पर 100 रू. अर्थ दण्ड देना होगा।
- स्नातक एवं परास्नातक अन्तिम सेमेस्टर के विद्यार्थियों की समावर्तन समारोह में उपस्थिति अनिवार्य होगी। अनुपस्थित रहने पर 100 रु. अर्थ दण्ड देना होगा।

छात्रवृत्तियाँ

- राज्य सरकार से प्राप्त विभिन्न छात्रवृत्तियाँ नियमानुसार देय होंगी।
- महाराणा प्रताप शिक्षा परिषद् की ओर से योग्यता के आधार पर प्रत्येक कक्षा में प्रथम एवं द्वितीय स्थान प्राप्त करने वाले महाविद्यालय में अध्ययनरत छात्र/छात्राओं को प्रति वर्ष 10 दिसम्बर को योग्यता छात्रवृत्ति प्रदान की जाती है। महाविद्यालय के प्रत्येक संकाय में प्रथम स्थान प्राप्त छात्र/छात्राओं को प्रतिवर्ष 10 दिसम्बर को पुरस्कृत किया जाता है।

- महाराणा प्रताप शिक्षा परिषद् द्वारा प्रतिवर्ष 10 दिसम्बर को निम्न पुरस्कार दिए जाते हैं –

  क– स्नातक अन्तिम वर्ष के सर्वोच्च अंक प्राप्त विद्यार्थी को स्व. रामलखन चौधरी स्मृति पुरस्कार – प्रमाण–पत्र के साथ रू. 2100 नकद।

  ख– स्नातकोत्तर अन्तिम वर्ष के सर्वोच्च अंक प्राप्त विद्यार्थी को स्व. कृष्ण कुमारी चौधरी स्मृति पुरस्कार – प्रमाण–पत्र के साथ रू. 2100 नकद।

  ग– चतुर्मुखी योग्यता के आधार पर स्नातक के श्रेष्ठतम विद्यार्थी को ब्रह्मलीन महन्त अवेद्यनाथ स्वर्ण पदक।

  घ– चतुर्मुखी योग्यता के आधार पर स्नातकोत्तर के श्रेष्ठतम विद्यार्थी को ब्रह्मलीन महन्त दिग्विजयनाथ स्वर्ण पदक।

- योगिराज बाबा गम्भीरनाथ नि:शुल्क सिलाई–कढ़ाई केन्द्र के श्रेष्ठतम प्रशिक्षणार्थी को 'योगिराज बाबा गम्भीरनाथ स्मृति पुरस्कार' – प्रशस्ति–पत्र के साथ सिलाई मशीन।

उत्सव एवं विशेष कार्यक्रम

महाविद्यालय में मुख्य रूप से निम्नलिखित उत्सवों एवं कार्यक्रमों का आयोजन किया जाता है। स्वतन्त्रता दिवस, ब्रह्मलीन महन्त दिग्विजयनाथ जी महाराज की पुण्यतिथि, महाराणा प्रताप जयन्ती/पुण्यतिथि, गाँधी जयन्ती, लाल बहादुर शास्त्री जयन्ती, भारत–भारती पखवारा, गणतंत्र दिवस, संस्थापक सप्ताह समारोह, वार्षिक क्रीड़ा समारोह, संगोष्ठी, विशेष व्याख्यान, विज्ञान मेला, समावर्तन समारोह आदि। प्रतिवर्ष अगस्त माह में सप्तदिवसीय ब्रह्मलीन राष्ट्रसन्त महन्त अवेद्यनाथ स्मृति व्याख्यानमाला इत्यादि का आयोजन महाविद्यालय में किया जाता है।

साइकिल एवं वाहन स्टैण्ड

महाविद्यालय परिसर में निश्चित साइकिल स्टैण्ड में ही सभी शिक्षक, कर्मचारी एवं विद्यार्थी को साइकिल, स्कूटर तथा मोटरसाइकिल रखना होगा। इसके लिए छात्र/छात्राओं को निर्धारित शुल्क जमा करने के साथ इस सम्बन्ध में तय नियमों का पालन करना भी अनिवार्य होगा।

नियन्ता मण्डल

मुख्य नियन्ता	डॉ. सत्येन्द्र नाथ शुक्ला, मो. 9451187906
सदस्य	श्रीमती शिप्रा सिंह
	श्री जितेन्द्र प्रजापति
	डॉ. इक्ष्वाकु प्रताप सिंह
	श्री हरिकेश यादव

प्रवेश समिति

संयोजक	डॉ. हनुमान प्रसाद उपाध्याय, मो. 9415856773
सदस्य	डॉ. अरूण कुमार राव
	डॉ. सुबोध कुमार मिश्र
	डॉ. भावना पाण्डेय
	डॉ. अभय प्रताप सिंह
	श्री विनय कुमार सिंह
	श्री अनूप कुमार पाण्डेय
	श्री प्रियांशु श्रीवास्तव
	श्री नन्दन शर्मा

चक्रानुक्रम में महाविद्यालय के सभी प्राध्यापकों का सहयोग लिया जाता है।

हमारे प्रयास ...

- प्रात: सरस्वती वन्दना, प्रार्थना, वन्देमातरम, राष्ट्रगान एवं श्रीमद्‌भगवद्‌गीता के श्लोक के साथ महाविद्यालय की दिनचर्या प्रारम्भ।
- प्रत्येक महापुरुष की जयन्ती अथवा पुण्यतिथि पर प्रार्थना सभा में उन पर संक्षिप्त परिचयात्मक उद्‌बोधन के साथ उन्हें श्रद्धांजलि।
- 08 जुलाई से बी.एड्. तृतीय सेमेस्टर एवं 01 सितम्बर से बी.एड. प्रथम सेमेस्टर की कक्षाएं प्रारम्भ।
- 08 जुलाई से स्नातक एवं स्नातकोत्तर अन्तिम वर्ष की कक्षाएं प्रारम्भ।
- 08 जुलाई से स्नातक तृतीय सेमेस्टर तथा 01 अगस्त से स्नातक प्रथम सेमेस्टर की कक्षाएं प्रारम्भ।
- पाठ्‌यक्रम योजना के अनुसार समस्त कक्षाओं का संचालन।
- 16 अगस्त से प्रयोगशालाएं शुरू।
- छात्रसंघ का चुनाव अगस्त के अंतिम सप्ताह तक।
- प्रवेश समिति में छात्र-छात्राएँ सदस्य एवं संयोजक।
- छात्र, छात्राओं, प्राध्यापक, कर्मचारी आदि द्वारा प्रत्येक शनिवार को स्वैच्छिक श्रमदान।
- सप्ताह में एक दिन छात्र-छात्राओं द्वारा कक्षाध्यापन।
- छात्र-छात्राओं का मासिक मूल्यांकन।
- महाविद्यालय प्रशासन में छात्र-छात्रा सहभाग अर्थात् नियन्ता मण्डल, पुस्तकालय, प्रयोगशाला, खेल, सांस्कृतिक कार्यक्रम इत्यादि समितियों में छात्र सदस्य।
- विद्यार्थियों, शिक्षकों, कर्मचारियों का गणवेश निर्धारित।
- छात्र-छात्राओं द्वारा शिक्षकों का मूल्यांकन, शिक्षक प्रतिपुष्टि प्रपत्र द्वारा।
- विश्वविद्यालय पूर्व परीक्षा में अपनी-अपनी कक्षाओं में प्रथम स्थान प्राप्त छात्र-छात्राओं को पुस्तकालय की विशेष सुविधा, प्रवेश समिति की सदस्यता, उनकी उत्तर पुस्तिकाएं पुस्तकालय में अवलोकनार्थ रखा जाना।
- सत्रांत पर समावर्तन संस्कार (दीक्षान्त) समारोह का आयोजन।
- शिक्षकों द्वारा छात्र-छात्राओं को गोद लेने की प्रक्रिया।
- सत्र में दो बार शिक्षक-अभिभावक एवं पुरातन छात्र परिषद् की बैठक।
- प्रतिवर्ष अगस्त माह में साप्ताहिक राष्ट्रसंत महन्त अवेद्यनाथ स्मृति व्याख्यान माला।
- प्रतिवर्ष 'विमर्श' (वार्षिक) एवं 'मानविकी' (अर्द्धवार्षिक) नामक शोध पत्रिकाओं का प्रकाशन।
- प्रत्येक सत्र में राष्ट्रीय संगोष्ठी/कार्यशाला का आयोजन।
- ग्रामीण महिलाओं के स्वालम्बन हेतु योगिराज बाबा गम्भीरनाथ नि:शुल्क सिलाई-कढ़ाई प्रशिक्षण केन्द्र का संचालन।
- महाविद्यालय के समस्त छात्र/छात्राओं एवं ग्रामीण बच्चों हेतु नि:शुल्क कम्प्यूटर प्रशिक्षण।
- गुरू श्री गोरक्षनाथ शोध एवं अध्ययन केन्द्र का संचालन।
- नेपाल शोध एवं अध्ययन केन्द्र का संचालन।
- प्रत्येक विभाग द्वारा एक गाँव को गोद लेकर जनजागरण अभियान द्वारा संस्थागत सामाजिक दायित्व का निर्वहन।
- महन्त अवेद्यनाथ नि:शुल्क प्राथमिक उपचार केन्द्र का संचालन।
- एन.सी.सी., एन.एस.एस. एवं रोवर-रेंजर्स का संचालन।

योगिराज बाबा गम्भीरनाथ सेवाश्रम
(महाविद्यालय छात्रावास)